पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग
द्वारा निर्धारित
अक्तूबर - नवंबर पाठ्यक्रम के अनुरूप

कक्षा - दसवीं विषय - हिन्दी

पाठ - सदाचार का तावीज़

निबंधकार - हरिशंकर परसाई

हरिशंकर परसाई जी ने हिन्दी साहित्य में व्यंग्य को एक विधा का दर्जा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने व्यंग्य को हल्के - फुल्के मनोरंजन की परिधि से बाहर निकालकर समाज और देश की ज्वलंत समस्याओं से जोड़ने का काम किया है। 'सदाचार का तावीज़' व्यंग्य पाठ में हरिशंकर परिसाई जी ने भ्रष्टाचार के कारण तथा निवारण के उपायों को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। इस व्यंग्य के माध्यम से लेखक स्पष्ट करता है कि व्यक्ति सदाचार के रास्ते पर तभी चल सकता है जब भ्रष्टाचार के मौके खत्म हों। रिश्वतखोरी या भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए सभी कर्मचारियों को सन्तोषजनक वेतन और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना आवश्यक है । परसाई जी ने मानव मन की स्वाभाविकता पर प्रकाश डाला है। समय और स्थिति के अनुसार मनुष्य अपने विचारों और आदर्शों को भी बदल लेता है ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
सदाचार	अच्छा आचरण
घूस	रिश्वत
भ्रष्टाचार	बुरा आचार – विचार
तरकीब	उपाय , युक्ति
विराटता	बहुत बड़ा , विशालता

शब्द	अर्थ
कल	यंत्र , मशीन
स्थूल	मोटा
सूक्ष्म	बारीक
पेशगी	किसी वस्तु के मूल का वह अंश जो काम करने वाले को पहले ही दिया जाता है , अग्रिम
अगोचर	अप्रत्यक्ष , अदृश्य

प्रपितामह	परदादा
विशेषज्ञ	किसी विषय विशेष का ज्ञान रखने वाला
कंदरा	गुफ़ा
अंजन	काजल
तावीज़	रक्षा-कवच , मंत्र लिखा कागज़ या धातु का टुकड़ा जिसे हाथ पर या गले में धारण किया जाता है
आँजकर	आँखों में काजल लगाकर

उत्सुकता	अधीरता , बेचैनी
व्याप्त	समाया हुआ
आस्तीन	पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढकता है , बाँह
सर्वव्यापी	हर तरफ फैला हुआ
असमंजस	दुविधा

अभ्यास
(क) विषय – बोध

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. राजा ने राज्य में किस चीज़ के फैलने की बात दरबारियों से पूछी ?
उत्तर : राजा ने राज्य में भ्रष्टाचार फैलने की बात दरबारियों से पूछी ।
प्रश्न 2. राजा ने भ्रष्टाचार ढूंढ़ने का काम किसे सौंपा ?
उत्तर : राजा ने भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम विशेषज्ञों को सौंपा ।
प्रश्न 3. एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने किसे पेश किया ?
उत्तर : एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया ।
प्रश्न 4. साधु ने राजा को कौन - सी वस्तु दिखायी ?
उत्तर : साधु ने राजा को सदाचार का तावीज़ दिखाया ।
प्रश्न 5. साधु ने तावीज़ का प्रयोग किस पर किया ?
उत्तर : साधु ने तावीज़ का प्रयोग कुत्ते पर किया ।
प्रश्न 6. तावीज़ों को बनाने का ठेका किसे दिया गया ?
उत्तर : तावीज़ों को बनाने का ठेका साधु को दिया गया ।
प्रश्न 7. राजा वेश बदलकर पहली बार कार्यालय कब गए थे ?
उत्तर : राजा वेश बदलकर पहली बार कार्यालय महीने की दो तारीख को गए थे ।
प्रश्न 8. साधु को तावीज़ बनाने की कितनी पेशगी दी गई ?
उत्तर : साधु को तावीज़ बनाने के लिए पाँच करोड़ की पेशगी दी गई ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. दरबारियों ने भ्रष्टाचार न दिखने का क्या कारण बताया ?

उत्तर :- दरबारियों ने भ्रष्टाचार न दिखने का कारण बताते हुए कहा कि वह बहुत बारीक होता है। दरबारियों ने कहा कि उनकी आँखें अपने राजा की विराटता देखने की इतनी आदी हो गई हैं कि उन्हें कोई बारीक चीज़ दिखती ही नहीं। उन्हें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें भी अपने राजा की छवि दिखेगी क्योंकि उनकी आँखों में तो अपने राजा की ही सूरत बसी है ।

प्रश्न 2. राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से क्यों की ?

उत्तर :- जब विशेषज्ञों ने राजा को भ्रष्टाचार की विशेषताएं बताते हुए कहा कि भ्रष्टाचार हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है, अगोचर है। लेकिन हर जगह मौजूद है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है । यह सुनकर राजा सोच में पड़ गए और कहने लगे कि ये सभी गुण तो ईश्वर के हैं। ईश्वर भी सूक्ष्म है, अगोचर है और सर्वव्यापी है। भ्रष्टाचार की इन्हीं विशेषताओं के कारण राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से की ।

प्रश्न 3. राजा का स्वास्थ्य क्यों बिगड़ता जा रहा था ?

उत्तर :- राजा अपने राज्य में हर तरफ़ फैले भ्रष्टाचार से बहुत परेशान था। उसके मंत्री न तो भ्रष्टाचार की पहचान कर पा रहे थे और न ही भ्रष्टाचार को समाप्त करने की कोई ठोस योजना लागू कर पा रहे थे। दरबारी और विशेषज्ञ राजा को भ्रष्टाचार समाप्त करने के कोई उचित उपाय न देकर कागज़ी योजनाओं का बोझ बढ़ाते जा रहे थे । इसलिए चिन्ता में राजा का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था।

प्रश्न 4. साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार के बारे में क्या कहा ?

उत्तर :- साधु ने सदाचार और भ्रष्टाचार के बारे में बताते हुए कहा कि सदाचार और भ्रष्टाचार मनुष्य की आत्मा में होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमानदारी की मशीन फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस मशीन में से ईमानदारी या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। मनुष्य आत्मा की पुकार के अनुसार ही काम करता है। जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमानदारी के स्वर निकालने के लिए साधु ने एक सदाचार का तावीज़ बनाया था। जिस आदमी की बाज़ू पर यह बँधा होगा, वह सदाचार के रास्ते पर चल पड़ेगा । इस तावीज़ में से निरंतर सदाचार के स्वर निकलते हैं जो व्यक्ति के अंदर से आने वाले बेईमानी के स्वरों को ईमानदारी के स्वरों में बदल देते हैं । वह इन स्वरों को 'आत्मा की पुकार' समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है।

प्रश्न 5. तावीज़ किस लिए बनवाए गए थे ?

उत्तर :- राजा ने अपने राज्य में हर जगह फैले हुए भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए तावीज़ बनवाये थे। जब साधु ने बताया कि उसके सदाचार के तावीज़ से ईमानदारी के स्वर निकलते हैं। जिस भी व्यक्ति की बाज़ू पर यह बँधा होगा, वह सदाचार के रास्ते पर चल पड़ेगा । तावीज़ की यह विशेषताएं सुनकर राजा ने साधु को करोड़ों तावीज़ बनाने के लिए कहा ताकि राज्य के प्रत्येक सरकारी कर्मचारी की बाज़ू पर सदाचार के तावीज़ को बाँधा जा सके और भ्रष्टाचार को रोका जा सके।

प्रश्न 6. महीने के आखिरी दिन तावीज़ में से कौन - से स्वर निकल रहे थे ?

उत्तर :- महीने के आखिरी दिन जब राजा ने अपना वेश बदलकर एक कर्मचारी को रिश्वत के रूप में पाँच का नोट दिखाया तो उस कर्मचारी ने नोट लेकर जेब में रख लिया । राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया और पूछा कि क्या तुम आज सदाचार का तावीज़ बाँधकर नहीं आए ? कर्मचारी ने तावीज़ बाँधा हुआ था। तब राजा ने तावीज़ पर कान लगाकर सुना। तावीज़ में से स्वर निकल रहे थे - " अरे, आज इकतीस है। आज तो ले ले । "

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए :-

प्रश्न 1. विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार खत्म करने के क्या - क्या उपाय बताए ?

उत्तर : विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार खत्म करने के निम्नलिखित उपाय बताए :-

राज्य की व्यवस्था में परिवर्तन : विशेषज्ञों ने उपाय बताया कि हमें राज्य की व्यवस्था में परिवर्तन करना होगा। राज्य में से भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। यदि कोई रिश्वत लेता है या रिश्वत देता है तो उसके खिलाफ कार्यवाही करनी होगी । भ्रष्टाचार फैलाने वालों को रोकना होगा ।

ठेकेदारी बंद करनी होगी : विशेषज्ञों ने उपाय बताया कि भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए ठेकेदारी को बंद करना होगा । अगर राज्य में ठेका है तो ठेकेदार है तो अधिकारियों की घूस है । अगर ठेका मिट जाएगा तो घूस भी खत्म हो जाएगी । भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए हमें यह जाँच-पड़ताल करनी होगी कि कौन किससे रिश्वत ले रहा है और क्यों ले रहा है या व्यक्ति किन कारणों से विवश होकर रिश्वत दे रहा है।

प्रश्न 2. साधु ने तावीज़ के क्या गुण बताए ?

उत्तर : साधु ने तावीज़ के गुण बताते हुए कहा कि उसने कई वर्षों के चिन्तन के बाद इस तावीज़ को बनाया है । जिस आदमी की बाज़ू पर इस तावीज़ को बाँधा जाता है, वह सदाचार के रास्ते पर चल पड़ता है । उसने तावीज़ का प्रयोग कुत्ते पर भी किया था। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता। इस तावीज़ में से सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की

आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं तब इस तावीज़ की शक्ति उसके बेईमानी के स्वरों को सदाचार के स्वरों में बदल देती है। वह इन स्वरों को 'आत्मा की पुकार' समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है । इस तावीज़ को पहनने से व्यक्ति के मन से सब तरह का लालच, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार खत्म हो जाते हैं ।

प्रश्न 3. 'सदाचार का तावीज़' पाठ में छिपे व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर : 'सदाचार का तावीज़' एक व्यंग्यात्मक (गूढ़ार्थ) रचना है जिसमें देश में फैले भ्रष्टाचार पर व्यंग्य कसा गया है। इसमें लेखक दिखाता है कि हम एक ऐसी व्यवस्था में रह रहे हैं जिसमें भ्रष्टाचार को दूर करने के उपायों में भी भ्रष्टाचार के अवसर (मौके) ढूँढ़ लिए जाते हैं । भ्रष्टाचार भाषणों से दूर नहीं होगा और न ही स्लोगनों से। वाद - विवाद करने और विचार करने से भी भ्रष्टाचार दूर नहीं होगा। भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए नागरिकों में नैतिक मूल्य, ईमानदारी, सच्चाई, मेहनत जैसे गुण विकसित करने होंगे। जब देश के नागरिकों में ईमानदारी, सच्चाई, मेहनत और देश प्रेम जैसे गुण आ जाएंगे, देश भ्रष्टाचार से मुक्त हो जाएगा और तरक्की करेगा । सरकारी कर्मचारियों को जब सन्तोषजनक वेतन (तनख्वाह) दिया जाएगा और आर्थिक सुरक्षा दी जाएगी तभी देश में से रिश्वतखोरी खत्म होगी। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सभी नागरिकों और सरकारों को सच्चे मन और ईमानदारी से कोशिश करनी होगी तभी देश भ्रष्टाचार मुक्त हो पायेगा।

(ख) भाषा - बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए :-

शब्द	विपरीत शब्द
एक	अनेक
गुण	अवगुण
सूक्ष्म	स्थूल

शब्द	विपरीत शब्द
पाप	पुण्य
विस्तार	सकुंचन
ईमानदारी	बेईमानी

2. निम्नलिखित शब्दों के दो - दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

शब्द	पर्यायवाची शब्द
राजा	सम्राट,नरेश, भूप, भूपति
मनुष्य	मानव, नर, आदमी
सदाचार	अच्छा चाल - चलन, सुशीलता, शीलाचार, नेकचलनी

शब्द	पर्यायवाची शब्द
कान	कर्ण, श्रवण, श्रुति
दिन	दिवस, वार, वासर
भ्रष्टाचार	बुरा आचरण, दुराचार, कदाचार,बेईमानी

3. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :-

वाक्यांश	एक शब्द
अच्छे आचरण वाला	सदाचारी
बुरे आचरण वाला	दुराचारी
जो किसी विषय का ज्ञाता हो	विशेषज्ञ

वाक्यांश	एक शब्द
हर तरफ फैला हुआ	सर्वव्यापक
जो दिखाई न दे	अदृश्य, अगोचर
जिसकी आत्मा महान हो	महात्मा

आशा करते हैं कि शिक्षा विभाग द्वारा किया गया यह प्रयास शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में लाभदायक सिद्ध होगा।

सधन्यवाद

		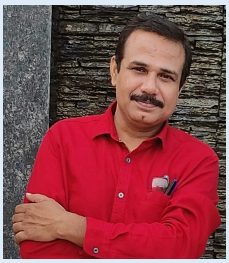
मार्गदर्शक :- डॉ॰ सुनील बहल स्टेट रिसोर्स पर्सन (हिंदी एवं पंजाबी) ।	लेखन एवं प्रस्तुति :- विजेता भगत हिन्दी शिक्षिका स.क.सी.से. स्कूल शंकर जालंधर ।	सहयोगी एवं संशोधक :- हरीश नागपाल हिन्दी शिक्षक स.ह.स्कूल निज्जरां जालंधर ।